

पीसीओएस और निसंतानता: एक जटिल स्वास्थ्य स्थिति से जूझना और उस पर गर्भ धारण करने का दबाव

पीसीओएस से संबंधित बांझपन/निसंतानता वाली महिलाओं को गर्भ धारण करने में असमर्थता के लिए अक्सर शर्मिंदगी उठानी पड़ती है, जो उन्हें दोहरा तनाव और "अधूरापन" महसूस कराता है।

लेख -वनिशका साव्हेने, 9 सितम्बर, 2021

पॉलीसिस्टिक ओवरी सिंड्रोम (पीसीओएस) एक अंतःस्रावी विकार है जो हार्मोनल असंतुलन, मेटाबोलिज्म प्रक्रिया में अवरोध और अनेक अन्य समस्याओं के जटिल मिश्रण को उत्पन्न करता है। एक अनुमान के मुताबिक 20 फीसदी भारतीय महिलाएं पीसीओएस से पीड़ित हैं। अखिल भारतीय स्तर पर मेट्रोपोलिस हेल्थकेयर द्वारा किए गए एक अध्ययन से पता चलता है कि 18 महीनों की अवधि में, 4824 महिलाओं को पीसीओएस के कारण हार्मोनल जटिलताओं का सामना करना पड़ा। अध्ययन से यह भी पता चलता है कि उनके प्राथमिक लक्षणों में अनियमित माहवारी, ऐंठन, शरीर पर अत्यधिक बाल होना, वजन बढ़ना और निसंतानता /बांझपन शामिल थे।

पीसीओएस के प्राथमिक परिणामों में से एक निसंतानता या बांझपन है। हमारे समाज में मातृत्व की अवधारणा को बहुत महत्व दिया जाता है। छोटी उम्र से ही लड़कियों को यह विश्वास दिलाया जाता है कि जीवन में उनके होने का असल उद्देश्य और मुख्य लक्ष्य गर्भधारण करना और संतान उत्पन्न करना ही है। यह अवधारणा इतनी गहराई से दिलो-दिमाग में उतर जाती है कि एक बच्चा पैदा करने में विफल रहने के परिणामस्वरूप एक महिला मानसिक-भावात्मक स्तर पर बुरी तरह से टूट जाती है। उसके दिमाग में, एक महिला होने का "सच्चा सार" एक बच्चा न पैदा करने में ही समाप्त हो जाता है।



यह भी देखा गया है कि जिन महिलाओं में पीसीओएस का निदान किया जाता है, वे चिंता और अवसाद से भी 3 गुना अधिक तक प्रभावित होती हैं। हालांकि इसका कोई ठोस कारण स्पष्ट नहीं है, डॉक्टर और शोधकर्ता इसे हार्मोन के असंतुलन से जोड़ कर देखते हैं। "निसंतानता से पीड़ित महिलाओं में घरेलू हिंसा पर एक अध्ययन" नामक शोध अध्ययन से पता चलता है कि जो महिलाएं बच्चे पैदा करने में सक्षम नहीं होती हैं, उनकी घरेलू हिंसा से पीड़ित होने की संभावनाएं भी अधिक होती हैं।

इस प्रकार, पीसीओएस से पीड़ित महिलाएं गंभीर तनाव में होती हैं। पीसीओएस से संबंधित बांझपन का निदान होने पर, अपने ऊपर बने रहने वाले सामाजिक दबावों के कारण वे मान लेती हैं कि वे मां बनने के अपने प्राथमिक कर्तव्य में विफल हो रही हैं। इसके अलावा, उन्हें अपने परिवार के सदस्यों द्वारा ही उनकी इस स्थिति के लिए लगातार नीचा दिखाया जाता है और उनका उपहास किया जाता है। ऐसे कई मामले सामने आए हैं जहां पति ने पत्नी को छोड़ दिया है या किसी अन्य महिला से शादी कर ली है जो गर्भ धारण करने में सक्षम है।

पीसीओएस वाली महिलाएं गर्भधारण करने में असमर्थ होती हैं, यह उनके तनाव और चिंता को और बढ़ा देता है। अपने ही परिवार में, वे उपहास का पात्र बन जाती हैं। समाज की पितृसत्तात्मक धारणाएं अनिवार्य करती हैं कि एक महिला "पूर्ण" महिला तभी है जब वह गर्भ धारण करने और बच्चे पैदा करने में सक्षम है। यह सोच पीसीओएस से ग्रस्त महिलाओं में भावनाओं की उठा-पटक को और उग्र कर देती है।



Image: [Intimina](#)

पीसीओएस को अधिकतर प्रजनन विकार के रूप में माना जाता है। अन्य कठिनाइयों और बीमारी के सटीक कारण पर ध्यान देने के बजाय, पीसीओएस से पीड़ित महिलाओं का उनके बांझपन या ऊपरी-कॉस्मेटिक समस्याओं के लिए तत्काल रूप से अधिक इलाज किया जाने लगता है। पीसीओएस को अक्सर इसकी संपूर्णता में नहीं देखा जाता है। इस प्रकार, इससे पीड़ित लोगों को यह स्त्रीत्व के विचार पर एक दाग की तरह लगता है। बीमारी के अंतर्निहित कारणों को महत्व न देकर, इसके साथ आने वाले मानसिक तनाव को भी अक्सर अनदेखा कर दिया जाता है।

जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, पीसीओएस वाली महिलाओं की गर्भ धारण करने में असमर्थता उनमें तनाव और चिंता को बढ़ा देती है। अपने ही परिवार में, वे उपहास का विषय हो जाती हैं। समाज की पितृसत्तात्मक धारणाएं अनिवार्य करती हैं कि एक "पूर्ण" महिला वह है जो गर्भ धारण करने और बच्चे पैदा करने में सक्षम है। यह सोच पीसीओएस से ग्रस्त महिलाओं में भावनाओं की उठा-पटक को और उग्र कर देती है।

इसलिए, स्त्रीत्व की यह सामाजिक परिभाषा घातक है। पीसीओएस से पीड़ित एक महिला जो बच्चे पैदा करने में असमर्थ है, वह वैसे ही परेशान है। उसके परिवार द्वारा उस पर बच्चा पैदा करने का लगातार दबाव बनाया जाता है। डॉक्टर भी दवा या उपचार वैसे ही लिखते हैं जो उसके गर्भवती होने की संभावना को बढ़ाने में मदद कर पाए।

पीसीओएस के कारण बांझपन या निसंतानता की शर्मिंदगी एक महिला के मन और शरीर पर भारी दबाव डालती है। उसे यह मानने पर विवश कर दिया जाता है कि उसकी अहमियत या मूल्य उसके केवल माँ बनने से ही निर्धारित हो सकता है। हमें नारीत्व/स्त्रीत्व के मानदंडों या मानकों के इर्दगिर्द होने वाली बहस को बदलना होगा। महिलाएं अपने आप में ऐसी व्यक्ति हैं जिनकी पहचान गर्भधारण करने की क्षमता से इतर भी है।



Image: [Parents](#)

यह पीसीओएस के अन्य शारीरिक और मानसिक प्रभावों से ध्यान हटाता है। पीसीओएस के साथ-साथ बांझपन का अतिरिक्त तनाव मनोदशा में जल्दी-जल्दी बदलाव, ऐंठन, मुँहासे और वजन को बढ़ाता है। इन सब के ऊपर, सुंदर दिखने के आदर्श सामाजिक मानकों को पूरा करने की निरंतर आवश्यकता, ये सब भावनाएं मिलकर महिलाओं के आत्मसम्मान को और बिगाड़ती हैं।

पीसीओएस के कारण बांझपन या निसंतानता की शर्मिंदगी एक महिला के मन और शरीर पर भारी दबाव डालती है। उसे यह मानने पर विवश कर दिया जाता है कि उसकी अहमियत या मूल्य उसके केवल माँ बनने से ही निर्धारित हो सकता है। हमें नारीत्व/स्त्रीत्व के मानदंडों या मानकों के इर्दगिर्द होने वाली बहस को बदलना होगा। महिलाएं अपने आप में ऐसी व्यक्ति हैं जिनकी पहचान गर्भधारण करने की क्षमता से इतर भी है।

मातृत्व एक विकल्प/चुनाव/पसंद या निर्णय है और इसे आगे बढ़ाने के कई तरीके हो सकते हैं। चाहे जो भी परिस्थितियां हों, महिला की भावनात्मक और शारीरिक बेहतरी या खुशहाली सर्वोपरि है।